इकाई 20 नृपविलास और वर्षा वर्णन

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 नृप विलास वर्णन

20.3 वर्षा वर्णन

20.4 सारांश

20.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.6 अभ्यास प्रश्न

20.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप–

- राजा नल की विलासिता का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- वर्षा वर्णन से भली–भाँति परिचित हो सकेंगे।
- गद्यों में प्रयुक्त कठिन शब्दों को सरलता से समझ सकेंगे।
- पद्यों में प्रयुक्त रसों का ज्ञान कर सकेंगे।
- पद्यों में प्रयुक्त छन्दों का ज्ञान कर सकेंगे।
- पद्यों में प्रयुक्त अलङ्कारों का ज्ञान कर सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

नृप विलास वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया जाएगा। जिसमें राजा के विभिन्न विलास पूर्ण जीवन का अत्यन्त रमणीय चित्रण चित्रित किया गया है। राजा अपने प्रबुद्ध तथा समझदार मन्त्री पर राज्यभार सौंपकर विलासिता का जीवन जीने लगता है। आगे चलकर वर्षा ऋतु का अत्यन्त मनोहारी वर्णन महाकवि ने प्रस्तुत किया है जिसमें वर्षा में होने वाले पादपों, वृक्षों, वनस्पतियों तथा सुगन्धित लताओं का हृदयावर्जक वर्णन प्रस्तुत है। मनोहारी है।

20.2 नृप विलास वर्णन

अथ स पार्थिवस्तस्मिन्नमात्ये परिजनपरिवृढे प्रौढप्रेमणि निगूढ़मंत्रे मंत्रिणि तृणीकृतस्त्रैणविषयरसे सौराज्यरागजनने जननीयमाने जनस्य, सर्वोपधाशुद्धबुद्धौ निधाय राज्यप्राज्यचिन्ताभारमभिनवयौवनारम्भरमणीये रम्यरमणीजननयनहृदयप्रिये प्रियङ्गुभासि जितमदनमहस्यपहसितसुरासुरसौभाग्ययशसि विस्मापितसमस्तजनमनसि लसल्लावण्यपुजपराजितसकल समुद्राम्भसि कान्तिकटाक्षितचन्द्रमसि वयसि वर्तमानों मानितमानिनीजनयौवनसर्वस्वः स्वयमनवरतं सकलसंसारसुखसन्दोहमन्वभूत।

शब्दार्थ – पार्थिवः = राजा। अमात्ये = मन्त्री के प्रति। परिजनपरिवृढे = सेवक समूह में अथवा सेवकों में बढ़े हुए। प्रौढप्रेमणि = परिपक्व प्रेम में। निगूढ़मंत्रे = मंत्रणा को गुप्त रखने वाले। तृणीकृतः = तिरस्कृत, उपेक्षित। स्त्रैणविषयरसे = स्त्री सम्बन्धी विषय रस में, सम्भोग आदि में। सौराज्यरामजनने = उत्तम राज्य में अुनराग उत्पन्न करने वाले। जननीयमाने जनस्य = माता के समान आचरण करने वाले। सर्वोपधाशुद्धबुद्धौ = सभी प्रकार से शुद्ध–बुद्धि वाले। निधाय = रखकर अथवा डालकर। राज्यप्राज्यम् = विशाल राज्य को। चिन्ताभारः = चिन्ता का भार। अभिनव = नवीन। प्रियंगुभासि = प्रियंगुलता के समान सुशोभित। जितमदनमहस्यपहसितसुरासुरसौभाग्यहसित = कामदेव के सौन्दर्य को भी जीतने वाली तथा देवताओं और असुरों के सौभाग्य यश को तिरस्कृत करने वाली। विस्मापितसमस्तजनमनसि = विस्मापितानि = आश्चर्यचकित की गयी। समस्तजनानां मनांसि = सभी लोगों के मन मे। लसत् = सुशोभित। लावण्यपुञ्जेन = सौन्दर्य समूह से। पराजितः = तिरस्कृत। सकलानाम् = समस्त, समुद्राणाम् = समुद्रों के।अम्भसि = जल में। कान्तिकटाक्षितचन्दमसि = कान्ति से, कटाक्षितः =पराजित। चन्द्रमसि = चन्द्रमा के। वयसि वर्तमाना = युवावस्था में स्थित। मानितमानिनी = मानितम् = सम्मानित। मानिनीजनानाम् = मानवती स्त्री के। यौवनसर्वस्व = युवावस्था के सर्वस्य। स्वयमनवरतम् = स्वयं निरन्तर। सकलसंसारसुखसन्दोहम् = समस्त संसार के समूह को। अन्वभूत = अनुभव किया।

हिन्दी अनुवाद – वह राजा (नल) उस श्रुतशील नाम वाले, सेवक समूह द्वारा बढ़े हुए परिपक्व प्रेम वाले, मंत्रणा को गुप्त रखने वाले, स्त्री सम्भोगादिजन्य आनन्द को तुच्छ समझने वाले, उत्तम राज्य में अनुराग उत्पन्न करने वाले, प्रजा के लिए माता समान आचरण करने वाले, सभी प्रकार से शुद्ध–बुद्धि वाले मन्त्री पर विशाल राज्य की चिन्ता का भार डालकर स्वयं नवीन यौवन के प्रादुर्भाव से रमणीय, सुन्दर रमणीयजनों के नयन तथा हृदय को प्रिय लगने वाला, प्रियंगुलता के समान शोभित, कामदेव की भी सुन्दरता को जीतने वाली, देवों तथा दानवों के यश को भी तिरस्कृत करने वाली, सम्पूर्ण मनुष्यों के मन को आश्चर्य चकित करने वाली, सुशोभित सुन्दरता समूह से समुद्रों के जल को तिरस्कृत करने वाली कान्ति से चन्द्रमा पर भी कटाक्ष करने वाली, आयु को प्राप्त हुई मानियों के सर्वस्व यौवन धन का मान करता हुआ संसार के सारे सुख समूह का अनुभव किया अर्थात् सकल सुखों को भोगा।

राजा नल के विलासी जीवन का वर्णन–

तथाहि कदाचिदनुत्पन्नविषमरणो गरुड़ इवाहितापकारी हरिवाहनविलासमकरोत्। कदाचिच्चन्द्रमौलिरिव मदनबाणासनातिमुक्तशरसञ्छादितायां पर्वतभुवि विजहार। कदाचिदच्युत इव शिशिर कमलाकरावगाहनोत्पन्नपुलककोरकिततनुरनन्तभोगभाक् सुखमन्वतिष्ठत्। कदाचिन्नलिनयोनिरिव राजसभावस्थितः प्रजाव्यापारमचिन्तयत्।

शब्दार्थ एवं क्लिष्टार्थ – विषमरणः = विषम युद्ध अथवा विष से मरना। अहितापकारी = अहितानाम् = शत्रुओं के। अपकारी = अपकार करने वाले। अथवा अहि = सर्प। तापकारी = सन्ताप देने वाला। हरिवाहनविलासम् = विष्णु के वाहन बनने का अनन्द अथवा अश्वरथ का आनन्द लेना था। कदाचित् = किसी समय। चन्द्रमौलिरिव = भगवान् शिव की भाँति। मदनबाणासनातिमुक्तशरसंछादितायाम् = कामदेव द्वारा छोड़े गये अतिशय बाणों से ढकी हुई अथवा मदन, बाण, असन, अतिमुक्त तथा शर नामक झाड़ियों से युक्त। पर्वतभुवि = पर्वत स्थली पर। विजहार = भ्रमण करता था।

कदाचित् = किसी समय । अच्युत् इव = भगवान विष्णु के समान। शिशिरः = शीतल। कमलाकरः = कमल खिले तालाबों में। अवगाहनेन = स्नान करने से। उत्पन्नः = उत्पन्न हुए। ये पुलकाः = रोमाञ्च। कोरकिता = अंकुरित। तनुः = शरीर वाला। अनन्तभोगभाक् = असंख्य भोगों को भोगता था। अनन्तस्य = शेषनाग के। भोगभाक् = शरीर शय्या का उपयोग करने वाले। कदाचित् = किसी समय। नलिनयोनिरिव = ब्रह्मा की तरह। राजसभावस्थितः = राजसभा में बैठकर। प्रजाव्यापारम् = राज–काज को, प्रजाकार्य को। अचिन्तयत् = सोचा करता था।

हिन्दी अनुवाद – क्योंकि, किसी समय, सर्पों को सन्ताप देने वाले, विष से मृत्यु को प्राप्त न होने वाले, भगवान् विष्णु के वाहन होने का आनन्द लेते हुए गरुड़ के समान वह राजा नल शत्रुओं का अपकार करने वाला, बिना विषम युद्ध के उपस्थित होते हुए अश्वरथ का आनन्द लेता था। किसी समय, कामदेव द्वारा छोड़े गये अतिशय बाणों से ढकी हुई पार्वती के साथ बिहार करते हुए शंकर जी के समान, मदन, बाण, असन, अतिमुक्त तथा शर नामक वृक्षों तथा कुञ्जों से घिरी हुई पर्वत, भूमि पर विचरण करता था। किसी समय शीतल लक्ष्मी के हाथों स्पर्श किये जाने से उत्पन्न रोमाञ्च तथा आनन्द वाले तथा शेषनाग की शय्या का उपयोग करने वाले भगवान् विष्णु के समान वह नल शीतल जल तथा कमलसमूह वाले जलाशय में स्नान करने से उत्पन्न रोमाञ्च के आनन्दित होकर असीम सुखों का अनुभव किया करता था। किसी समय राजस् भाव में स्थित होकर सृष्टि व्यापार की चिन्ता करते हुए ब्रह्मा जी के समान वह राजसभा में बैठकर प्रजा के न्याय आदि कार्यों को किया करता था।

राजा की विलास–क्रीड़ा का वर्णन

कदाचिन्मयूर इव कान्तोन्नमत्पयोधरमण्डलिविलासेन हर्षमभजत्। कदाचित् नक्षत्रराशिरिवाश्विन्या सेनया समन्वितो मृगानुसारी बहुशष्पवनमार्गं बभ्राम। कदाचिदाञ्जनेय इवाक्षविनोदमन्वतिष्ठत्। कदाचित् वानरेश्वर इव सुग्रीवो 'वैदेहीति' ब्रुवाणस्यालधुकाकुस्थस्यार्थिनः प्रार्थना क्रियतां सफलेति वानरपुंगवानादिदेश।।

शब्दार्थ एवं श्लिष्टार्थ – मयूर इव = मोर के समान। कान्तोन्नमत्पयोधरमण्डलविलासेन = कान्ता के मण्डलाकार उभरे हुए स्तनों के विलास से अथवा कान्ता = रमणीय। उन्नमत् = ऊपर जाते हुए। पयोधरमण्डलविलासेन = मेघ समूह की क्रीडाओं से। अश्विन्या = घोड़ों अथवा तेजगति से चलने वाली। स = सहित। इनया = सूर्य से। अश्विन्या = अश्विनी नक्षत्र के। समन्वितः = समन्वित होती हुई। मृगानुहारी = मृग का अनुसरण करने वाली अथवा मृगशिरा नक्षत्र का अनुसरण करती हुई। बहुशष्पवनमार्गम् = अत्यधिक हरियाली वाले तथा वनमार्ग में अथवा (बहुशः+पवन+मार्गम्) =अत्यधिक आकाश मार्ग में। बभ्राम = धूमता था अथवा विचरण करती हुई। अक्ष–विनोदम् = पाँसों से मनोरंजन तथा (अक्षस्य+वि+नोदम्) = रावणसुत अक्ष का वध। वानरेश्वरः = वानरों का स्वामी अथवा मनुष्यों का स्वामी राजा। वैदेहीति ब्रुवाणस्यालघुकाकुस्थस्यार्थिनः = हे सीते! हे सीते! इस प्रकार उच्च स्वर से अभ्यर्थना करते हुए महान् (राम की) अथवा (वै+देहि+इति+ब्रुवाणस्यालघुकाकुस्थस्यार्थिनः) = भिक्षा दो इस प्रकार बोलते हुए शूद्र याचना में तत्पर की। वानरपुंगवानाविदेश = वानर श्रेष्ठों को आदेश दिया। अथवा (वा+नर+पुङ्गवान्+आदिदेश) = श्रेष्ठ राजपुरुषों को आदेश देता था।

हिन्दी अनुवाद – किसी समय बादलों के उमड़ने पर मण्डलाकार नृत्य करते हुए, हर्षित होते हुए, मोर के समान वह राजा नल कान्ता के उभरे हुए गोलाकार स्तनों के

साथ क्रीड़ा करता हुआ हर्षित होता था। किसी समय सूर्य से युक्त, अश्विनी नक्षत्र से समन्वित, मृगशिरा नक्षत्र का अनुसरण करती हुई, आकाश में विचरण करती हुई नक्षत्र राशि के समान वह नल कभी तीव्र गति से चलने वाली सेना के साथ मृगों का पीछा करता हुआ घास से भरे हुए वन मार्ग में घूमा करता था। किसी समय रावणसुत अक्ष को मारने वाले हुनमान के समान पासों के खेल में मनोरंजन किया था। किसी समय– हे सीते! हे सीते! इस प्रकार कहते हुए प्रार्थना करने वाले 'महान् राम की प्रार्थना सफल की जावे' इस प्रकार श्रेष्ठ वानरों को आदेश देने वाले सुग्रीव के समान वह राजा नल कभी भिक्षा दो' इस प्रकार कहते हुए तुच्छ याचक की याचना पूरी की जावे । इस प्रकार श्रेष्ठ राजपुत्रों को आदेश देता था।

अलङ्कार – यहाँ पर श्लिष्टोपमा अलङ्कार है।

कदाचिन्मकरकेतन इव सुमनसो मार्गणान् विधाय स्वगुणं कर्णपूरीचकार। कदाचिदम्भोनिधिरिवोच्चैः स्तननाभिरम्याः कृतानिमेषनयनविभ्रमाः, सकन्दर्पाः सिषेवे वेलाविलासिनीः। कदाचिद्दशरथ इवायोध्यायां पुरि स्थितः सुमित्रोपेतो रममाणरामभरतप्रेक्षणेन क्षणमाह्लादमन्वभूत्। एवमस्य सकलजीवलोकसुख सन्तानमनुभवतो यान्ति दिनानि।

शब्दार्थ – मकरकेतन इव = कामदेव के समान। सुमनसो = प्रसन्न करके अथवा फूलों से। मार्गणान् विधाय = याचकों को मनोवाच्छित देकर अथवा बाण बनाकर। स्वगुणम् = अपने त्याग आदि गुण को अथवा अपनी प्रत्यञ्चा को। कर्णपूरीचकार = कान तक पूरा खींचकर अथवा कानों को पूरा भरकर। अम्भोनिधिः इव = समुद्र के समान। स्तननाभिरम्या = स्तनों तथा आकर्षक नाभि वाली अथवा (स्तनेन+अभिरम्या) गर्जनों से सुशोभित, कृतानिमेषनयन विभ्रमाः = निर्निमेष (बिना पलक झपकाए हुए) नेत्रों से लीलायें करने वाली अथवा(कृत+अनिमेष+नयन+विभ्रमाः) भँवरों द्वारा मछलियों को अपने साथ ले जाने की क्रीड़ा वाली। सकन्दर्पाः = कामयुक्त अथवा (स+कम्+दर्पा) जल के ज्वारों से युक्त। वेलाविलासिनी = चार वनिताओं का अथवा शोभायमान ज्वारों का, जलवृद्धि का। सिषेवे = सेवन किया करता था। अयोध्यायां पुरिस्थितः = अयोध्या नगरी में स्थित अथवा अपराजेय नगरी में स्थित। सुमित्रोपेतः = उत्तम मित्रों से युक्त अथवा सुमित्रा रानी से युक्त। रममाणरामभरतप्रेक्षणेन = स्त्रियों की क्रीड़ा (अभिनय) वाले, सुन्दर नाटक देखने से अथवा क्रीड़ा करते हुए तथा राम और भरत को देखने से। क्षणमाह्लादम् = क्षण भर प्रसन्नता को। अन्वभूत = अनुभव किया करता था। सुखसन्तानम् = सुखों की परम्परा।

हिन्दी अनुवाद – और किसी समय फूलों को बाण बनाकर (अपने धनुष की) प्रत्यञ्चा को कान तक खींचकर (प्रहार करने वाले) कामदेव के समान वह राजा नल याचकों को (उनका माँगा हुआ देकर) प्रसन्नचित करके अपने त्याग–दानादि गुण से संसार के लोगों को कानों को भरा करता था। किसी समय ऊँची–ऊँची गर्जना से, सुन्दर मछलियों को इधर–उधर से जाने वाली लहरों वाली भवरों वाली, ज्वारयुक्त, सीमा पर उठती हुई जल वृद्धियों का सेवन करते हुए समुद्र के समान वह राज नल स्तनों तथा नाभि से आकर्षक लगने वाली, अपलक नेत्रों से विलासों को करने वाली कामयुक्त, वारवनिताओं का सेवन करता था। किसी समय सुमित्रा रानी सहित अयोध्या नगरी में स्थित खेलते हुए राम तथा भरत को देखकर क्षण भर के लिए आनन्दित हुए महाराज दशरथ के समान वह राजा नल अपराजेय निषधा नगरी में स्थित उत्तम मित्रों से युक्त सुन्दर स्त्रियों की क्रीड़ा वाले अभिराम नाटक को देखकर क्षण भर आनन्द लेता था।

इस प्रकार इस राजा नल के सम्पूर्ण सांसारिक प्राणियों की सुख परम्परा का अनुभव करते हुए दिन बीता करते हैं।

अलङ्कार – श्लिष्टोपमा अलङ्कार है। वर्णसाम्य से अनुप्रास अलङ्कार है।

20.3 वर्षा वर्णन

हिन्दी अनुवाद – उसके पश्चात् सूर्य की प्रभा तिरस्कृत हो जाने पर, जलवृष्टि होने पर, चातक पक्षी की प्यास शांत हो जाने पर,, हाथियों के शरीर के तृप्त हो जाने पर, मानिनी नायिकाओं के मन की ग्रन्थि खुल जाने पर, उत्पन्न हुए जवासों के सूख जाने पर, विधवा वधुओं को शत्रु प्रतीत होने वाले, मेढकों के प्रसन्न हो जाने पर, चन्द्रमा के बादलों में छिप जाने पर, कमलों वाले तालाबों के मलिन हो जाने पर, प्रियतमाओं के अपने प्रियतम के वशीभूत हो जाने पर, राजहँसों द्वारा मानसरोवर के लिए प्रस्थान कर दिये जाने पर, कदम्ब पुष्पों के पराग के झड़ जाने पर, दीप्यमान इन्द्रधनुष की आभा को धारण करने पर, भौंरों में मतवालापन धारण करा देने पर, भैंसों की कृशता को दूर कर दिए जाने पर, नदियों के प्रचुर जल प्रवाह के कारण विस्तार को प्राप्त कर लेने पर, आकाश में बिजली के चमकने पर, वायु द्वारा मेघों में मंद–मंद गति उत्पन्न करने पर, किसानों की स्त्रियों के प्रसन्न हो जाने पर, खिली हुई केतकी के पुष्पों की गंध पीकर भौरों के मतवाले हो जाने पर, वृक्षों के उग आने पर, गरीबों की नींद नष्ट कर देने पर, ग्वालों के गर्व उत्पन्न कर, भौंरों के कदम्ब वृक्षों की डालों में लटक जाने पर प्रसन्न कामदेव के अट्टहास के समान बादलों द्वारा गम्भीर गर्जना करने पर, पके जामुन के फूलों द्वारा वन की आंतरिक शोभा को श्यामल कर दिये जाने पर, पथिकों के (हृदय में) प्रियाविरहजनित शोक के उत्पन्न कर दिये जाने पर, मतवाले मोरों की मधुर केका सुने जाने पर, तोरई समूह के बढ़ जाने पर, जूही लता के जाल के बिछ जाने पर, नवमालिका की माला के छा जाने पर, नवीन पलाशांकुरों के निकल आने पर, पके जामुन वृक्षों के समूह की शोभा के सुशोभित होने पर, भिक्षा माँगते समय सन्यासियों के मन में रास्ता खराब होने से खेद होने पर, हिरनों की पीड़ा के शांत होने पर, ,कौओं आदि पक्षियों द्वारा घोंसला बनाने के लिए व्याकुल होने पर, इन्द्रगोपों (मेघों) की आकाश में बहुलता हो जाने पर। तमाल वृक्षों से, वर्षा जल से फव्वारा बन जाने पर, दसों दिशाओं के मलिन हो जाने पर, दिनों में भी रात्रि की शंका करने वाले व्याकुल चकवा–चकवी समूह के करुण क्रन्दन करने पर, गाड़ियों का आना–जाना रुक जाने पर, लताओं के पल्लवित हो जाने पर, पृथिवी को जीतने की अभिलाषा वाले राजाओं की युद्ध यात्रा समाप्त हो जाने पर, बैलों की भूख शांत हो जाने पर, बाणासुर की भुजाओं की काटने वाले भगवान् विष्णु के क्षीरसागर में शयन करने पर, नदियों के किनारे टूट जाने पर, दावाग्नि के शांत हो जाने पर विरही जनों के मन को पीड़ा पहुँचने पर, तमाल वृक्ष की छाया घनी हो जाने पर, छायी गयी कुटियों में घोड़ों को बाँधना प्रारम्भ कर देने पर, खिले हुए मौलसिरी वन के सुशोभित हो जाने पर, हलों द्वारा भूमि को जोत दिये जाने के कारण गाँवों की सीमायें बंद हाने पर, संसार को जीवन देने वाले वर्षा समय के आ जाने पर किसी समय पानी बरसने वाले दिन आखेट वन के रक्षक ने प्रवेश करके राजा से कहा।

20.4 सारांश

राजा नल भोग विलासों से आकर्षित होकर अपने कर्तव्यनिष्ठ मन्त्री को राज्यभार सौंपकर विलासिता पूर्ण जीवन यापन करने लगता है। जिसका अत्यन्त रमणीय आकर्षक एवं मनोहारी वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है। गद्य और पद्य के श्लिष्टात्मक विधि से अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण रीति से रचना की गयी है। तत्पश्चात् वर्षा का वर्णन अन्य महाकवियों की भाँति प्रस्तुत किया है जिसमें वन, उपवन, जलाशय, नदी, वृक्षों, क्यारियों ,पुष्पित सुगन्धित लताओं का दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

20.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें–

1. नल चम्पू– चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
2. नल चम्पू– प्रकाशन केन्द्र लखनऊ।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. शिवपूर्ति शर्मा–दया पब्लिेशिंग हाउस, इलाहाबाद।
4. रामायण चम्पू– निर्णय सागर, मुम्बई
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास–आचार्य बलदेव उपाध्याय–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

20.6 अभ्यास प्रश्न

अभ्यास प्रश्न –1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

1. राजा नल प्रजा के लिये––––सदृश थे।
2. चंद्रमौलि भगवान––––––है ।
3. भगवान विष्णु का वाहन––––––––है।
4. राजा नल ––––––––को बाण बनाता था।
5. बाणासुर की भुजाओं को काटने वाले भगवान––––––––है।

अभ्यास प्रश्न –2

एक शब्द मे उत्तर दीजिए –

1. आश्विनी और मृगशिरा क्या है ?
2. प्रस्तुत इकाई में किस ऋतु का वर्णन है ?
3. चातक क्या है ?
4. कदम्ब क्या है ?

5. भगवान विष्णु कहाँ शयन करते है ?
6. प्रस्तुत इकाई में राजा नल किस पुरूषार्थ का सेवन करते है ?

अभ्यास प्रश्न –3

1. श्लेष अलङ्कार का एक उदाहरण दीजिए।
2. शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण तथा उदाहरण लिखिए।
3. राजा नल की विलासिता को संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4. वर्षा वर्णन के प्रमुख तथ्य प्रस्तुत कीजिए।
5. द्रुतविलम्बित छन्द लक्षण लिखकर उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

Notes

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY